

न्यायालय अतिरिक्त सम्भागीय आयुक्त, जोधपुर  
पीठासीन अधिकारी— अजीतसिंह राजावत, आर.ए.एस.

राजस्व अपील संख्या 573/2023

अपीलान्त	बनाम	रेस्पोंडेन्टस
1. लादूदास		1. जिला कलेक्टर, जोधपुर।
2. श्यामदास		2. तहसीलदार, जोधपुर।
3. मनोहरदास पुत्रान देवीदास		
4. फतुदास		
5. झूमरदास पुत्रान गेनदास		
6. माधुदास पुत्र		
7. रूघदास पुत्र		
8. शान्ती पत्नी नाथूदास निवासी—लोरडी पण्डितजी		
9. फली पत्नी बाबूदास, निवासी—बिराई चारणान		
10. गजीया पत्नी पुखदास निवासी—जाजीवाल कला		
11. सोवनी पत्नी लूणदास		
12. भैरूदास		
13. दुर्गादास		
14. मदनदास		
15. सांगीदास पुत्रान रूपदास निवासी—लोरडी पण्डितजी, तहसील जोधपुर		



राजस्व अपील अन्तर्गत धारा-75 (क), राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 विरुद्ध आदेश जिला कलेक्टर जोधपुर के पत्रांक प.12 (3)राज /आवंट /1698-1704 दिनांक 27.03.2003 को पारित किया गया।

उपस्थिति:-

1. श्री एस0डी0 वैष्णव, अधिवक्ता अपीलार्थी की ओर से उपस्थित।
2. श्री नवलसिंह दहिया, राज0 अधिवक्ता रेस्पोंडेन्ट की ओर से उपस्थित।

निर्णय

दिनांक:-28 मार्च, 2024

1. अपीलान्तस के द्वारा प्रस्तुत यह प्रथम अपील जिला कलेक्टर जोधपुर के पत्रांक प.12 (3)राज /आवंट /1698-1704 दिनांक 27.03.2003 को जारी किये गये पत्र एवं तहसीलदार जोधपुर के द्वारा जारी आदेश क्रमांक भू0अ0 /2018 /

  
1  
अतिरिक्त सम्भागीय आयुक्त  
जोधपुर

राजस्व अपील संख्या 573/2024 लादूदास बनाम राज्य

315-359 दिनांक 24.01.2018 के विरुद्ध राजस्थान भू- राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 75 के तहत न्यायालय के समक्ष दिनांक 24.06.19 को प्रस्तुत की गई है।

2. अपील को सबजेक्ट टू लिमिटेशन दर्ज रजिस्टर किया जाकर रेस्पोंडेंट को जरिये नोटिस तलब किया गया।
3. अपीलान्टस के अधिवक्ता द्वारा अपील को अन्दर म्याद शुमार किये जाने हेतु किये गये कथनों के आधार पर अपीलान्ट की अपील को अन्दर म्याद शुमार किया जाता है। दौरान सुनवाई अपीलान्ट के अभिभाषक ने यह कथन किया कि मौजा लोरडी पण्डित जी ग्राम के कृषि भूमि ख0सं0 12,13,14,24,26,45,125, 440,614,615,640,643,910 कुल 13 खसरान की 89 बीघा 17 बिस्वा भूमि सम्वत 2011 व इसके पूर्व से खातेदार के रूप में ज्ञानदास, देवादास, रूपदास, नाथूदास वल्द बलदेवदास कौम साद अपीलान्ट के पूर्वजों के नाम से चली आ रही थी जिसकी फौतेगदी से उक्त खसरान की खातेदारी उत्तराधिकारी के रूप में ज्ञानदास के फौत के स्थान पर नामान्तरकरण विरासत में फतुदास, झूमरदास वल्द ज्ञानदास, देवादास के फौत के स्थान पर नामा0 संख्या 641 दिनांक 20.3.2007 पिसारत लादूदास, श्यामदास, मनोहरदास पिता देवादास तथा नाथूदास फौत के स्थान पर शांती पत्नी नाथूदास, माधुदास, रघुदास पुत्र एवं फुली व गाजिया पुत्रीया नाथूदास दर्ज किया गया। जबकि रूपदास के फौत हो जाने के बाद फौतेदगी दर्ज नहीं हो पाई अतः रूपदास के वारिसान गैरुदास, दुर्गादास, मदनदास, सांगीदास पुत्र रूपदास व सोवनी पत्नी स्व0 लूणदास पुत्रवधु रूपदास है। उक्त कृषि भूमि खतौनी बन्दोबस्त सम्वत 2011 से 2020 व इसके बाद से कृषक खातेदार के रूप में उनके पूर्वज के नाम राजस्व रेकर्ड में दर्ज रखी थी तथा संयुक्त रूप से हिस्सेदारी खातेदारी के रूप में दर्ज रही।
4. अपीलान्ट के अभिभाषक ने यह कथन किया कि राज्य सरकार के शासन सचिव देवस्थान विभाग जयपुर के आदेश प.12 (22)/देव/91 दिनांक 7.3.2003 को जारी परिपत्र/आदेश की पालना में जिला कलेक्टर जोधपुर के उक्त पत्र क्रमांक प.12(3)राज/आंव/1698-1704 दिनांक 27.3.2003 की पालना में तहसीलदार जोधपुर के उपरोक्त आदेश भू0अ0/ 2018/ 315-359 दिनांक 24.01.2018 की पालना में पटवारी हल्का द्वारा अपीलान्टगण की उक्त खातेदारीयुक्त कृषि भूमि में बिना किसी प्रकार की सुनवाई का अवसर एवं सूचना दिये ही तथा बिना नामान्तरकरण की कार्यवाही के राजस्व रेकर्ड में डोली बनाम



मंदिर श्री गोरधननाथ जी वाके देह नोट का इन्द्राज कर दिया जो कि प्राकृतिक न्याय सिद्धान्तों के विपरित एवं विधि विरुद्ध इन्द्राज किया गया। इससे अपीलान्तगण के खातेदारी हितों पर पूर्ण रूप से विपरित प्रभाव पडा।

5. अपीलान्तस के अभिभाषक ने यह कथन किया कि अपीलान्तगण की उक्त कृषि भूमि का राजस्व रेकॉर्ड में इस प्रकार से परिवर्तन करने का कोई अधिकार जिला कलेक्टर, तहसीलदार व पटवारी हल्का को नहीं है। लिहाजा इन अधिकारियान के द्वारा गैरकानूनी रूप से बिना अपीलान्त को सूचित किये ही जमाबन्दी में मंदिर श्री गोरधननाथ जी वाके देह इन्द्राज कर दिया जो निरस्त करने योग्य है।
6. अपीलान्तस के अभिभाषक ने यह कथन किया कि उक्त कृषि भूमि जागीरी अधिग्रहण अधिनियम 1952 व इससे पूर्व एवं राज0 काश्तकारी अधिनियम 1955 के पूर्व से ही राजस्व अभिलेख में अपीलार्थीगण की खातेदारी में दर्ज चली आ रही थी और उस समय से ही मंदिरों को जागीरदार माना गया है एवं जागीर अधिनियम की धारा 9 व 10 तथा आरटी एक्ट की धारा 15 (1) के तहत उन्हें खातेदारी अधिकार प्राप्त करने का हक है। इसी प्रकार आरटी एक्ट की धारा 12 (4) के तहत मंदिर श्री गोरधनाथ जी वाके देह जो खुदकाश्त के धारक थे, के अलावा व्यक्ति अपीलार्थीगण जो खुदकाश्त के उपअभिधारी के रूप में अभिलिखित थे, खातेदार रहे है, जिसके कारण उक्त खातेदारी का राजस्व रेकॉर्ड में परिवर्तन नहीं किया जा सकता है और नही अन्य किसी प्रकार का अंकन किया जा सकता है। उक्त अधिनियमों के तहत भी इन राजस्व अधिकारियों को इस प्रकार की कार्यवाही करने हेतु किसी प्रकार से अधिकृत नहीं किया गया है उसके उपरान्त भी अपीलान्तगण की खातेदारी भूमि को राजस्व रेकॉर्ड में परिवर्तन करते हुए मंदिर श्री गोरधनाथ जी वाके देह इन्द्राज कर दिया जो अधिकार क्षेत्र से बाहर जाकर किया गया है।
7. अपीलान्तस के अभिभाषक ने यह कथन किया कि उक्त प्रकरण आरटी एक्ट की धारा 5 (43) में अन्तर्विष्ट अभिधारी की परिभाषा के विहित भाग में आता है जैसा कि आरटी एक्ट की धारा 5(43)(छ) में अन्तर्विष्ट है। इस प्रकार अपीलार्थीगण पूर्व से लेकर आजदिन तक अभिधारी है। अपीलार्थीगण को उक्त कृषि भूमि उनके पूर्वजों को परिवार के भरणपोषण व जीवनयापन के प्रयोजनार्थ विधि अनुसार पट्टे पर प्रदान की गई थी जो आजदिन तक अपीलार्थीगण के कब्जाकाश्त में है।



राज0 काश्तकारी अधिनियम की धारा 15 एवं 16 (क), 19(1 क) के प्रावधानों के अनुसार मंदिर मूर्ति की माफी रिज्यूम हो जाने पर राजस्व रेकॉर्ड में अंकित खातेदार काश्तकार स्वतःखातेदार बन गये। इन अनुसार वह प्रत्येक व्यक्ति जिसका नाम दिसम्बर 1969 की 31 तारीख को उस समय चालू वार्षिक रजिस्ट्रों में खुदकाश्त के अभिधारी या उप अभिधारी के रूप में दर्ज था या इस प्रकार दर्ज नहीं था वह भी खातेदार अभिधारी हो जायेगा। इस सम्बन्ध में माननीय उच्च न्यायालय के द्वारा विभिन्न निर्णय नजीरो यथा आरएलआर, 2000(1) पेज 69, पेज 595, आरआरटी, 2011 (1), पेज 174, डीएनजे, 2000 पेज 528, एसबीसी रिट संख्या 12146/2013, 8136/2009, 5755/2011, 12409/2013 निर्णय दिनांक 2.11.2017 इत्यादि में सिद्धान्त प्रतिपादित किये गये हैं। अतः इन आधारों पर भी राजस्व रेकॉर्ड में परिवर्तन नहीं किया जा सकता है।

8. अपीलान्टस के अभिभाषक ने यह कथन किया कि राज0 सरकार के देवस्थान विभाग के उक्त परिपत्र दिनांक 7.3.2003 के पैरा (ख) में भी यह स्पष्ट किया गया है कि जो दिनांक 31.12.69 से पूर्व राजस्व रेकॉर्ड में सहकृषक दर्ज थे तथा जब से सम्बन्धित भूमि पर काबिज चले आ रहे हैं। अतः उक्त स्पष्टीकरण के बावजूद भी अपीलार्थीगण खातेदार अभिधारीगण के राजस्व रेकॉर्ड में परिवर्तन कर दिया गया है जो विधि विरुद्ध है। अतः उपरोक्त समस्त कारणों/आब्जर्वेशनों को मध्यनजर रखते हुए अपीलार्थीगण की अपील को स्वीकार किया जावे एवं अपीलार्थीगण की खातेदारी वाली कृषि भूमि के सम्बन्ध में देवस्थान विभाग, जयपुर के द्वारा जारी परिपत्र की पालना में जिला कलेक्टर जोधपुर व तहसीलदार जोधपुर की ओर से राजस्व रेकॉर्ड जमाबन्दी में किये गये अंकन/इन्द्राज को पुनः दुरुस्त करते हुए अपीलार्थी का नाम दर्ज किये जाने का आदेश प्रदान करावे।
9. प्रत्युत्तर में रेस्पोंडेन्ट की ओर से उपस्थित राजकीय अधिवक्ता ने अपीलार्थीगण की अपील का विरोध करते हुए यह कथन किया कि श्रीमान जिला कलेक्टर एवं तहसीलदार जोधपुर के द्वारा अपीलार्थी की खातेदारी वाली कृषि भूमि के सम्बन्ध में जो राजस्व रेकॉर्ड में इन्द्राज परिवर्तन किये गये हैं वह पूर्ण रूप से नियमों की पालना में तथा उक्त परिपत्र में मंदिर मूर्ति शाश्वत अव्यस्क होने के कारण मंदिर भूमि की खातेदारी भूमि का हस्तान्तरण अवैध होने के कारण मंदिर भूमि का अन्य व्यक्ति के नाम खातेदारी दिया जाना विधि विपरित होना माना है तथा इस प्रकार के हस्तान्तरणों की भू अभिलेख में प्रविष्टियां विलोपित कर पूर्ववत्

प्रविष्टिया अंकित किये जाने हेतु राज्य सरकार के निर्देशों में ही पटवारी हल्का द्वारा इस प्रकार की कार्यवाही सम्पादित करते हुए अपीलार्थीगण के नाम मंदिर भूमि की दर्ज की गई खातेदारी को विलोपित करते हुए पुनः मंदिर श्री गोरधननाथ जी वाके देह दर्ज की गई है जो उचित है। अतः अपीलान्तगण की अपील खारिज किये जाने योग्य होने से खारिज की जावें।

10. हमने पक्षाकारान अभिभाषक के द्वारा की गई बहस पर मनन किया एवं उपलब्ध अभिलेख, निर्णय नजीरों का गहनतापूर्वक अवलोकन व परीक्षण किया गया। उपलब्ध अभिलेख जमाबन्दी सम्बत 2061-2064 की छायाप्रति का अवलोकन किया जिसमें शासन सचिव देवस्थान विभाग जयपुर के आदेश प.12 (22)/देव/91 दिनांक 7.3.2003 तथा जिला कलेक्टर जोधपुर के पत्रांक प.12 (3)राज/आवंट/1698-1704 दिनांक 27.03.2003 एवं तहसीलदार जोधपुर के द्वारा जारी आदेश क्रमांक भू0अ0/2018/315-359 दिनांक 24.01.2018 की पालना में ग्राम लोरडी पण्डित जी की कृषि भूमि खसरा संख्या 12,13,14,24,26, 45,125,440,614,615,640,643,910 कुल 13 खसरान की 89 बीघा 17 बिस्वा भूमि जी को डोली बनाम मंदिर श्री गोरधननाथ जी वाके देह दर्ज किया गया है। इस सम्बन्ध में प्रस्तुत की गई खतौदी बन्दोबस्त की छायाप्रति का अवलोकन किया जिसमें खाता संख्या 50 में डोली बनाम मंदिर श्री गोरधननाथ जी वाके देह ब एतमाम पुजारी मेहन्त नेनूराम चेला अन्दराम कौम साद सा. देह अंकित किया हुआ है।

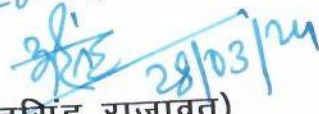
11. राज्य सरकार के देवस्थान विभाग जयपुर की ओर से जारी परिपत्र दिनांक 27.3.2003 में स्पष्ट रूप से यह अंकित करते हुए निर्देशित किया हुआ है कि मंदिर मूर्ति की खातेदारी भूमि शाश्वत अव्यस्क होने के कारण मंदिर मूर्ति की खातेदारी भूमि का हस्तान्तरण अवैध है ऐसे में तत्सम्बन्धी पूर्व में किये हस्तान्तरणों को विलोपित कर पूर्ववत प्रविष्टियां राजस्व रिकॉर्ड में अंकित की जावे। इस प्रकार स्पष्ट है कि जिला कलेक्टर जोधपुर, तहसीलदार जोधपुर एवं पटवारी हल्का द्वारा जो अपीलाधीन कार्यवाही सम्पादित की गई है, वह राज्य सरकार के उक्त निर्देशों के अनुसरण में सम्पादित की गई है। राज्य सरकार के द्वारा आदेशो/निर्देशों के विरुद्ध प्रस्तुत होने वाली अपीलों की सुनवाई का क्षेत्राधिकार सम्भागीय आयुक्त न्यायालयों को नहीं है। अपीलान्त अपनी अपील में यह कहीं पर भी स्पष्ट नहीं कर पाया है कि जिला कलेक्टर अथवा तहसीलदार के द्वारा की गई राजस्व रिकॉर्ड



राजस्व अपील संख्या 573/2024 लादूदास बनाम राज्य

में परिवर्तन सम्बन्धी कार्यवाही के विरुद्ध प्रथम अपील राज0 भू राजस्व अधिनियम, 1956 की धारा 75 (क) के तहत सुनने का क्षेत्राधिकार सम्भागीय आयुक्त को है। इस प्रकार उपरोक्त समस्त तथ्यों के आधार पर हमारा विनम्र मत है कि जिला कलेक्टर जोधपुर एवं तहसीलदार जोधपुर द्वारा की गई अपीलार्थी कार्यवाही में कोई त्रुटि कारित नहीं की है जिससे उक्त आदेश में हस्तक्षेप की कोई गुंजाइश हो।

12. अतः उपरोक्त विवेचन व विश्लेषण के परिणामस्वरूप अपील अपीलान्तगण अस्वीकार की जाती है। निर्णय आज दिनांक 28 मार्च, 2024 को सरे इजलास सुनाया गया।

  
(अजीतसिंह राजावत)  
अतिरिक्त सम्भागीय आयुक्त,  
जोधपुर